ओतेक एकानगीना होइत गेल। संस्कृत मे रचित साहित्यक अध्ययन मात्र पण्डित वर्ग धरि सीमित रहि गेल।

लोक प्रचलित भाषा मे साहित्य रचनाक परिचय गद्यक आरम्भहि सँ भेटैत अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णरत्नाकर' तत्कालीन समय मे प्राप्त गद्य रचनाक सर्वोत्कृष्ट प्रमाण मानल जाइत अछि। पश्चात् विद्यापतिक अवहट्ठ ओ मैथिली रचना तत्कालीन समाजक भाषायी विकास कें स्पष्ट करैत अछि। विद्यापतिक अवसानक पश्चात् 1757 ई० मे जखन पलासी युद्धक उपरान्त मिथिला मात्र नहि अपितु सम्पूर्ण पूर्वांचलमे अँग्रेजी साम्राज्यक स्थापना भऽ गेल तखनहिं सँ गद्य मे साहित्य रचनाक प्रश्रय देबाक कार्य प्रारम्भ भेल छल। एहि प्रसंग मैथिलीक श्रेष्ठ आलोचक समीक्षक मोहन भारद्वाज जी विस्तार पूर्वक विचार कयने छथि— "अँग्रेज लोकनि अपन शासनकें सुदृढ़ करबाक उद्देश्य सँ जखन जनता धरि पहुँचबाक विचार कयलनि तखन भाषामे गद्यक विकास आवश्यक लगलनि। ओहि समय मे जाहि तीन टा भाषाकें कार्य क्षेत्रमे राखल गेल से छल बंगला, उर्दू ओ हिन्दी।"

क्रमशः

डॉ० पंकज कुमार
अतिथि शिक्षक
मैथिली विभाग
कविवर विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

व्याख्यान - २

दिनांक - 03/07/2020

स्नातक तृतीय खंड

मैथिली कथा साहित्यक परम्परा

मैथिली साहित्यक विशिष्ट इतिहासकार डॉ० दुर्गानाथ झा श्रीश, संस्कृत साहित्यक महत्ता कें स्पष्ट करैत कहैत छथि — गद्यक सम्यक विकास केर बीच ओकरा हृदयांगम करबाक निमित्त हमरा लोकनि एकरा निम्नलिखित विभाग मे बाँटि सकैत छी —

(1) आरम्भिक संस्कृताधिकृत गद्य

(क) संस्कृताश्रित विकासशील गद्य एवं

(2) विकसित गद्य।

एहिमे प्रथम दुनू मे अन्तर बड़ थोड़ अछि। अन्तर एतबे जे आरम्भिक संस्कृताधिकृत गद्य संस्कृतक व्याकरण आ अभिव्यक्ति रीति सँ जकड़ल लगैत अछि तँ संस्कृताश्रित विकासशील गद्य मे क्रमिक संस्कृतक प्रभाव क्षीण होइत प्रतीत होइत अछि आ पूर्वापेक्षा स्वाभाविक लगैत अछि। कहबाक तात्पर्य जे तत्कालीन समयमे संस्कृतक प्रभाव ततेक व्यापक भए गेल, प्रयोगक सौम्यता एवं व्याकरणक नियम पूर्वक प्रयोग सँ एकर स्वरूप ततेक स्थिर भए गेल जे ओ सम्पूर्ण भारतवर्ष मे एक समान रूपेँ प्रसारित भए गेल। एतबा होइतहुँ देखल जाय तँ यदि एक दिश संस्कृतक प्रभाव समाज आ साहित्य पर व्यापक रूपेँ पड़ल तँ दोसर दिस ओ संकुचित सेहो होमय लागल। किएक तँ आदि कवि वाल्मीकिक कालमे जे संस्कृत द्विजातिक भाषा छल से क्रमिक रूपेँ मात्र विद्वत वर्गक भाषा बनि गेल। जनसामान्य मध्य प्रचलित लोक भाषा मे स्थितिजन्य परिवर्तन होइत गेल। लोक भाषा जातेक समृद्ध भेल संस्कृत

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA